॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

आप्नूहि श्रेयांसमति समं काम।

हे प्रभु!

तुम सामर्थ्यशाली हो, कल्याण को प्राप्त करो।

वर्ष ३३, अंक ४ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार २ नवम्बर, २००९ से ८ नवम्बर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

पृष्ठ सं १ से ८ तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं गुरु विरजानन्द जी के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर विशेष

विश्वगुरु के गुरु को हमारा नमन

महर्षि दयानन्द के उपकारों की गिनती करना, उनके बहुआयामी कृतित्त्व और बहुमुखी व्यक्तित्त्व का आंकलन करना आज के बुद्धिजीवी वर्ग के लिए सर्वथा असम्भव है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं, कठोर सच है। साहित्य–प्राण निराला जैसा कलम–धनी कहता है कि दयानन्द से बढ़कर भी कोई मनुष्य होता है, ऐसा इतिहास में प्रमाण नहीं। निराला लिखते हैं कि इधर (इस युग में) दयानन्द से बढ़कर हमारा किसी ने भला नहीं किया। अर्थात निराला के शब्दों का मूल्यांकन करें तो निराला की दृष्टि में दयानन्द से अधिक सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति संसार के इतिहास में नहीं मिलता। अधिकतम् मानवीय गुणों का अधिकतम् विकास जिस दयानन्द में था, उस दयानन्द ने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा और क्षमता को मानवता के हित व कल्याण में लगा दिया। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्त्व की महत्ता हम कैसे समझ सकते हैं। जो अपने प्राण घातक को कहता है कि तूने यह क्या किया–अभी तो इस शरीर से संसार का बहुत भला होना था। शरीर छूटने का दुःख नहीं, दुःख है कि इससे माँ मानवता की बड़ी सेवा होनी थी वह नहीं हो सकेगी। दयानन्द के समग्र उपकारों को शब्दों में पिरोने का प्रयास करें तो कुछ यूँ कहा जा सकता है कि व्यक्ति से लेकर विश्व स्तर तक तथा जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मानव के सामने जितनी भी समस्याएँ आ सकती हैं, उन सबका सबसे सटीक, सरल एवं सुखद समाधान महर्षि दयानन्द ने व्यवहार में स्वीकारने योग्य सैद्धान्तिक रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर दिए हैं। दयानन्द की कोई बात देश, काल व वर्ग

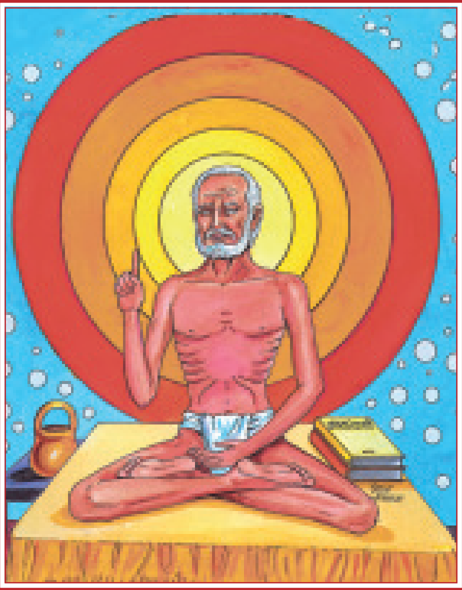

विशेष के लिए न होकर विश्व–मानव के लिए है। आर्यसमाज के सामने दयानन्द–संसार के उपकार का लक्ष्य रखता है। संसार का हर विवेकशील व्यक्ति, हर निष्पक्ष पुरुष, मानवता का भला सोचने व करने वाला हर मनुष्य दयानन्द विनिर्मित आर्यसमाज का सदस्य सभासद व अधिकारी हो सकता है, जनकल्याण के लिए किसी भी क्षेत्र में सेवा दे सकता है। सत्य का सम्मान करने कराने में दयानन्द की बराबरी करने वाला विगत् 5000 वर्षों में धरती तल पर कोई पैदा ही नहीं हुआ। दयानन्द की दया को देखने के लिए श्रद्धानन्द की आँखें चाहिए।

नाम का दयानन्द, काम का दयानन्द

वि. सम्वत् 1917 के कार्तिक मास, तदनुसार नवम्बर 1860 को जब दयानन्द प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द की कुटी में मथुरा पहुँचे, तब वे नाम के दयानन्द थे।

उससे पूर्व स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती ने ब्रह्मचारी चैतन्य को संन्यास दीक्षा देकर दयानन्द सरस्वती बना दिया था। गुरु से नाम पाकर भी दयानन्द वह दयानन्द नहीं बन पाए जिसे हम आज जानते हैं। जिनके बारे में हम प्रख्यात् साहित्यकार सूर्यकान्त निराला के विचार पढ़ चुके हैं, वह दयानन्द स्वामी पूर्णानन्द जी वाला दयानन्द नहीं है।

– ***शेष पृष्ठ 3 पर***

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का

१२५वां निर्वाण वर्ष समापन समारोह शीघ्र

सार्वदेशिक आयोजन समिति की बैठक इसी सप्ताह

आपको विदित ही है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में आम जनमानस तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र, चरित्र, कार्यों, मन्तव्यों, विचारों को पहुंचाने के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से एक वृहद एक वर्षीय कार्ययोजना का निर्माण किया गया था। जिसका का उद्घाटन समारोह 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में भारत की राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी के कर कमलों से 14 नवम्बर, 2008 को किया गया था।

इस एक वर्षीय योजना के अन्तर्गत बहुत बड़े–बड़े महर्षि दयानन्द जी के चित्र वाले होर्डिंग्स, पोस्टर, स्टीकर, विद्यालययी बच्चों की खेल प्रतियोगिताएं, भाषण प्रतियोगिताएं, टीवी पर विज्ञान, समाचार पत्रों में श्रद्धांजलि देते विज्ञापन, भजन संध्याएं, प्रचार कार्यक्रम, विद्वत्त गोष्ठियां, कॉमिक्स योजना मुख्य कार्य कार्य किए गए। इनके अतिरिक्त विदेशों में तथा भारत के अनेक प्रान्तों प्रान्तीय आर्य महासम्मेलनों तथा प्रचार यात्राएं भी इस कार्ययोजना का एक अंग रहीं। वर्ष भर से चल रही इस सम्पूर्ण कार्य योजना के व्यापक प्रभाव देखने को मिले हैं।

अब 125वां निर्वाण वर्ष समापन की ओर है तथा इसका औपचारिक समापन समारोह भी होना है। इस हेतु सार्वदेशिक स्तर की आयोजन समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी से विचार विमर्श के निर्णय किया गया कि शीघ्र ही समापन समारोह आयोजित किया जाए। यह आयोजन अपने आप में गरिमापूर्ण होगा, जिसमें कार्ययोजना को पूर्ण करने में सहयोग देने वाले आर्यसमाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, विद्यालयों, कार्यकर्ताओं को पुरस्कार एवं पूरे वर्ष में किए गए कार्यों का आंकलन प्रस्तुत किया जाएगा।

जिन आर्यसमाजों/ आर्य प्रतिनिधिसभाओं/ संस्थाओं ने इस योजना के अन्तर्गत कार्य किए हैं उनसे निवेदन है कि वे अपने कार्यों की रिपोर्ट शीघ्र भेजें ताकि उनके कार्यों के आधार पर अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं का सम्मान सुनिश्चित किया जा सके।

आशा है अगले सप्ताह तक तिथि एवं स्थान की निश्चित कर दिया जाएगा। आर्यजन अभी से तैयारियां करें और सूचना प्राप्त होते ही समापन समारोह में अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यसमाज के संस्थापक, भारतीय नवजागरण के पुरोधा, युगपुरुष महर्षि दयानद सरस्वती जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

दर्शन व्याख्या - 19

न्यायदर्शन के अनुसार 'शरीर'

गतांक से आगे :–

शरीर: न्याय दर्शन में जिन बारह प्रमेयों (ज्ञातव्य पदार्थों) का उल्लेख किया गया है (न्याय0, 1–1–9) , उनमें आत्मा के बाद द्वितीय स्थान पर 'शरीर' का नाम है। शरीर (विभिन्न योनियों) की उत्पति का निमित कारण पूर्व जन्मों में किये गये शुभ और अशुभ कर्म है। (पूर्वकृतकलानुबन्धात्तदुत्पतिः) न्याय0, 3–2–64) प्राणी ने पूर्वजन्म में मन, वाणी और शरीर से धर्म और अधर्म के जो कर्म किये है, तदनुसार सुख दुःख के रूप में भोगों को भोगने के लिए उसे योनि (शरीर) प्राप्त होता है। अन्यत्र कहा भी गया है– भोगायतनम्शरीरय् शरीर किसे कहते है,इसे व्याख्यायित करते हुए महर्षि गौतम ने लिखा है **'चेष्टेन्द्रियार्थाश्रय :शरीरम्'** (न्याय0 1–1–11) अर्थात पदार्थ के लिए चेष्टा करने वाली इन्द्रियों का जो आश्रय –स्थल है, उसे शरीर कहते है और शरीर में बिना आत्मा के इन्द्रियाँ भोग्य पदार्थो के लिए चेष्टा नहीं कर सकती। इससे यह भी स्पष्ट है कि आत्मा का अधिवास स्थान भी शरीर ही है अर्थात् आत्मा समग्र शरीर में व्यापक रूप से रहती है और इन्द्रियों के माध्यम से वही शुभाशुभ कर्मों का फल भोगती है।

सामान्यत: यह कहा जाता है कि शरीर पंच भौतिक है, क्योंकि इसकी निर्मिति के पाँच सामान्य उपादान कारण हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश, किन्तु इनमें से पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों का मुख्य उपादान क्या है, इस प्रश्न पर विचार करते हुए एक सूत्र में न्यायदर्शन के प्रणेता मेंधातिथि ने लिखा है ***'पार्थिव गुणान्तरोपलब्धे:।'*** अर्थात पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के शरीर की उत्पत्ति का मुख्य उपादान पृथ्वी ही है, इसीलिए इनके शरीर में कठोरता, गन्धादि के गुण प्रत्यक्षत: प्राप्त होते हैं। पंचभूतों में से पृथ्वी की प्रमुखता के ही कारण शरीर पार्थिव भी कहा जाता है। अन्य भूत –जल, अग्नि, वायु, और आकाश पृथ्वी पर रहनेवाले प्राणियों के शरीर के निमित्त कारण है। (जलीय प्राणियों के शरीर का उपादान जल तथा अन्य लोकों के प्राणियों के शरीर का उपादान कोई और भूत हो सकता है।) शरीर के पार्थिव होने में श्रुति का यह शब्द प्रमाण भी द्रष्टव्य है–' सूर्यन्तें चक्षुर्गच्छतात्, पृथ्वी ते शरीरम्' अर्थात आँखें सूर्य में जाती हैं और शरीर पृथ्वी में लीन होता है। कार्य के कारण में समा जाने का ही नाम नाश है। शरीर का उपादान कारण पृथ्वी है, अत: शरीर के नष्ट होने पर (शरीर से आत्मा के विलग हो जाने पर) शरीर पृथ्वी में मिल जाता है। यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय में भी स्पष्टत: कहा गया है 'भस्मान्तं शरीरम' (यजु0 40/15) अर्थात अन्त में शरीर ने भस्म हो जाना है, मिट्टी में मिल जाना है– अपने उपादान कारण में लीन हो जाना है। स्पष्टत: न्यायदर्शन में शरीर की परिभाषा, विभिन्न योनियों में जीवात्मा की शरीरोत्पत्ति के निमित्त कारण, शरीर को पार्थिवता और अन्तत: शरीर की नश्वरता एवं उसके पृथ्वी तत्त्व में विलीन हो जाने का सम्यक् आख्यान है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्) ,
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 ***क्रमश:***

The Sixteen Rituals of Aaryas

Rituals are the activities performed to elevate the body, mind and soul. They alter the nature of an object and give it a new shape. Just like a goldsmith burns the gold in fire to purify it, similarly in Vedic culture, an infant is put in a furnace of excellent impressions (sanskaar). His flaws are burnt out and attempts are made to incorporate virtues into him. This attempt takes the form of ritual.

According to Rishi Charak, "sanskaaro hi gunaantaraa-dhaana-muchyate" i.e. the replacement of existing bad traits by good qualities and virtues is called impression. When a child is born, he brings with himself two kinds of impressions. The first category comprises of those impressions that he has been carrying with him through several lives. The second type consists of those which he attains from his parents' impressions as part of his inherited legacy. These can either be good or bad. The remodeling of a human-being, vide the program of impressions involves enveloping a child in an atmosphere of potential opportunities for the development of good impressions. It also encompasses de-rooting of the bad impressions, whatever their source be i.e. previous births, inheritance from parents or their acquisition in the present life. Most of our pursuits are worldly but the program of impressions is spiritual.

The real purpose of Vedic culture is the spiritual development of man who is pre-occupied with building dams and digging streams. A nation that starts progressing develops a network of plans - five-year plans, ten-year plans etc, but since our vision is limited to the material world, the goal of all these plans fails to be any more than constructing dams, digging rivers, making roads and laying railway lines. Our materialistic viewpoint has led us to consider the issue of 'daily bread' as the most important question to be addressed. Once the question of 'daily bread' has been answered, all the problems of the world are resolved. Once the dams and rivers have led to an increase in the yield, no other problem remains.

To be continued....

गतांक से आगे :–

देववाणी : संस्कृत

संस्कृतविकासे बाधानां परिहारणाञ्च चिन्तनम्

अद्यत्वे राजनीतेः प्रभावः वरीतर्त्यते वर्धते च। एतादृश्याम् अवस्थायां राजनीतेः प्रभावप्रतापयोः स्वशक्तेश्च प्रदर्शनं कृत्वा अस्माभिरपि स्वकार्यं साधनीयम। एषः युगधर्मः स्वीकर्त्तव्यः संस्कृतज्ञैः संस्कृतानुरागिभिश्च। यतो हि राजनेतारः यदा मतं याचन्ते तदा तेषां स्थितिः कीदृशी भवति तथा यदा ते मन्त्रिपदमलङ्कुर्वन्ति तदा तेषां दशा कीदृशी भवति जानन्ति भवन्तः सुधियः। नास्ति आवश्यकता अत्र कथनस्य।

यत्र कुत्रापित बोद्धारः वक्तारः नेतारः तत्तच्छास्त्राणां विद्वांसः भाषणं भाषन्ते तत्र संस्कृतस्य काञ्चिद् सूक्तिम् उक्त्वा स्वभाषणं रसात्मकं, प्रामाणिकं, पारम्परिकं, प्रभावोत्पादकं, संस्कृतेः रक्षणार्थ, भावबोधगमनार्थम् आत्मानं संस्कृतिानुराग गिद्धिध्यथ', वैधानिकं कर्तुं सततं प्रयतन्ते, परञ्च तस्यै उपरि अवधानं न ददति। एवम् आभाति यत् संस्कृतभाषायां याः सुक्तयः सन्ति तासां सुक्तिनां प्रयोगं विधाय स्वकथनस्य समर्थनम् अनुमोदनमञ्च कृत्वाा कार्यं साधयित्वा ताः त्यजन्ति। तासां सूक्तिनां तेषां व्यवहारे प्रयोगे किमपि प्रयोजनम् अस्ति नैव। एवम् अनुभयूते यत् संस्कृतभाषा तूद्धरणानां भाषा भूत्वा समाप्ता, अवसितं तस्याः कार्यम्।

संस्कृतभाषाविषयेऽपि ऐतेषां स्थितिः नास्ति भिन्ना अन्या वा। अहं भारतीयानां विदुषां, वैज्ञानिकानां, राजनेतृणां, दार्शनिकानां, पाश्चात्यविपश्चितां च मतानि कैश्चिद् उद्धरणैः सह प्रस्तौतुमीहे अत्र–

(1) संस्कृतिमेकस्मिन् काले जगतः केवलमेका भाषा आसीत् इयं भाषा ग्रीकलेटिनतोप्यधिका पूर्णा व्यापका च वर्त्तते। – ***प्रो.बॉप:***

(2) संस्कृतमाधुनिकयोरोपीयभाषाणां जननी अस्ति। ***–श्रीड्यूबोइ:***

(3) विकसितज्ञातभाषाणां संस्कृतंसर्वोच्चशिखरे आसीना वर्त्तते। ***–वि. वॉन हमबोल्ट:***

(4) संस्कृतविश्वस्य महत्त्मा भाषा विद्यते। – ***मैक्सम्यूलर:***

(5) भारतं मानवजातेः जन्मभूमिः वर्तते तथा संस्कृतं योरोपीयभाषाणां माता...। भारतमाता अनेकेष्वर्थेषु अकमाकं सर्वेषां माता अस्ति। ***–विल ड्यूरां***

(6) यदि संस्कृतं देशस्य जनसाधारणस्य प्रतिदिवसीयव्यवहारात् पृथक क्रियेत तर्हि तस्य जीवनात् प्रकाशो लुप्येत तथा हिन्दूसंस्कृतेः ये विशिष्टाः गुणः विश्वचिन्तने प्रतिष्ठाः ते दुष्प्रभाविता भविष्यति यस्मात् भारतस्य विश्वस्य चोभयोः क्षतिः भविष्यति। ***– सर मिर्जा इस्माईल:***

– डॉ. जितेन्द्र कुमारः, प्राध्यापक, अजमेरस्थ दयानन्द महाविद्यालयीयः, अजमेर (राजस्थान) ***क्रमश:***

बोध कथा

ज्ञानी जग में रहत भी लिप्तमान हो नाहिं

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक थे लाला जी। काफी बूढ़े हो गए थे। दाना दलने की एक चक्की थी उनकी। दुकान पर बैठे थे। बूढ़े होने पर भी दाना दल रहे थे। दलते जाते, कहते जाते – 'इस जीवन से तो मौत अच्छी है।'

इसी समय एक साधु दुकान के पास से होकर निकले। उन्होंने लालाजी के ये शब्द सुने; सोचा – 'कितना दुःखी है यह व्यक्ति! इसकी सहायता करनी चाहिए।' उसके पास जाकर बोले – 'लाला, बहुत दुःखी है तू। मेरे पास एक विद्या है। यदि तू चाहे तो तुझे स्वर्ग ले जा सकता हूं। चलता है तो चल। इस दुःख से छुटकारा मिल जाएगा।'

लाला ने साधु की ओर देखा; बोला – 'बहुत दयावान् हो तुम, परन्तु मैं जा कैसे सकता हूं? इतना बूढ़ा हो गया, अभी तक कोई सन्ताननहीं है। सन्तान हो जाए तो चलूंगा अवश्य।'

साधु ने कहा– 'बहुत अच्छा!' और चला गया। कुछ वर्षों के बाद लाला के दो बेटे हो गए। साधु ने वापस आकर कहा – 'चलो लाला! अब तो तुम्हारी सन्तान हो गई।'

लाला ने कहा – 'हो तो गई, परन्तु अभी तक वह किसी योग्य तो नहीं। लड़के तनिक बड़े हो जाएं, तब तुम आना। मैं अवश्य चलूंगा।'

लड़के बड़े हो गए। साधु फिर आया तो दुकान पर नहीं थ। पूछा उसने कि लाला कहां है? तो पता चला कि मर गए। साधु ने योगबल से देखा कि मरकर वह गया कहां? तभी पता लगा कि दुकान के बाहर जो बैल बंधा है, वही पिछले जन्म का लाला है। उसके पास जाकर साधु ने कहा – 'अब चलेगा स्वर्ग को?'

लाला ने सिर हिलाकर कहा – 'कैसे जाऊं? बच्चे अभी नामझ हैं। मैं चला गया तो दूसरा बैल ले आएंगे। जितनी अच्छी प्रकार मैं बोझ उठाता हूं, उतनी अच्छी प्रकार वह उठाएगा नहीं। मेरे बच्चों को हानि हो जाएगी। ना भाई! अभी तो मैं नहीं जा सकता, कुछ देर और ठहर जा।'

पांच वर्ष व्यतीत हो गए। साधु फिर वापस आया। देखा – दुकान के सामने अब बैल भी नहीं है। दुकान के नए स्वामियों ने एक ट्रक खरीद लिया है। उसने इधर–उधर से पूछा कि वह कहां गया? ***– क्रमश:***

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्वगुरु के गुरु को हमारा ....

वह दयानन्द अगर गुरु विरजानन्द की कुटी तक नहीं आ पाता तो हमारे इन विलक्षण विशेषणों का पात्र सम्भवतः नहीं बन पाता। नाम के दयानन्द को काम का दयानन्द बनाने वाला कोई था तो वह नेत्रहीन साधु विरजानन्द ही था। 5–7 वर्ष की अल्पायु में नेत्र ज्योति खो चुका दीनहीन बालक एक दिन संसार को वेद ज्ञान जैसी प्रखर ज्योति देगा। यह किसने सोचा होगा? प्रभु के खेल भी बड़े निराले हैं। बचपन से जिसका जीवन अन्धकार का ग्रास बन गया हो, वह बालक अपने तप और अध्यवसाय से संसार को ज्ञानालोक से भर जाए यह अनहोनी नहीं तो क्या है? स्वामी विरजानन्द ने जीवनभर एक पुस्तक नहीं पढ़ी, लेकिन उसका मस्तिष्क एक पुस्तकालय से भी बड़ा ज्ञानकोष था। व्याकरण की गहराई में जाकर तलस्पर्शी पाण्डित्य के बल पर उसने धुरन्धरों को धूल चटा दी। नेत्र ज्योति खो चुके बालक ने अपना मस्तिष्क कितना ज्योतिष्मान कर लिया था। उसकी नेत्र ज्योति बाहर विचरण करने के स्थान पर अन्तर्मुखी होकर ज्ञानसिन्धु की अथाह गहराइयों को भेदने लगी थी। उस महान् आत्मा ने 'तत्त्वं पूषन्न अपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये' उपनिषद् वाक्य को जीवन में साक्षात् कर लिया था। सत्य धर्म के साक्षात्कार के लिए पूषन् प्रभु ने उसके अंतः चक्षु खोल दिए थे। उस अमृतत्त्व के इच्छुक को आवृतचक्षु होने की आवश्यकता ही कहाँ थी? आन्तरिक जगत् का अनुपम चितेरा वह दण्डी विरजानन्द सच्चे अर्थों में **'विश्व गुरु के गुरु'** की गौरवमयी गद्दी का योग्यतम् पात्र था, दयानन्द की प्रखर प्रतिभा का पारखी विरजानन्द सच्चे अर्थों में दयानन्द के अलौकिक प्रतिभा का मूल (बीज) कहा जाने के सर्वथा योग्य है। विरजानन्द न होता तो हमें ऐसा दयानन्द भी नहीं मिलता।

गुरु–गौरव का संवाहक दयानन्द

जहाँ हम महर्षि दयानन्द के जीवन में स्वामी विरजानन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान मानते हैं, वहाँ हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि गुरु विरजानन्द जी को स्वामी दयानन्द जैसा योग्य शिष्य न मिलता तो गुरु विरजानन्द जी की गुरुता 'विश्व गुरु के गुरु' जैसा विशेषण प्राप्त न कर सकती जो महत्त्व दयानन्द के लिए विरजानन्द जी का है, वही महत्त्व गुरु विरजानन्द जी के लिए स्वामी दयानन्द का है। विरजानन्द जी स्वामी दयानन्द जैसा शिष्य पाकर धन्य हो गए। गुरु विरजानन्द जी ने पढ़ाया तो औरों को भी था। एक लम्बी सूची उनके शिष्यों की है, लेकिन गुरु विरजानन्द जी को जो नाम व मान स्वामी दयानन्द जी के द्वारा प्राप्त हुआ है, वह नाम व मान उनका सम्पूर्ण शिष्य वर्ग नहीं दिला सका। सच में गुरु विरजानन्द जी अपने जीवन के तप–अर्जित सम्पूर्ण ज्ञान को यदि किसी को दे सके, तो वह थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। जो आग गुरु विरजानन्दजी के सीने में जल रही थी, उसी आग की लपटों से दयानन्द का अन्तरात्मा झुलस रहा था। धार्मिक पाखण्ड व अंधविश्वासों का जितना प्रबल विरोधी गुरु विरजानन्द था, उतना ही दयानन्द भी था। दयानन्द ने पूरे उत्तर भारत में घूम–घमकर धर्म के नाम पर होने वाले अधर्म का नंगा नाच देख लिया था। दयानन्द का सत्यशील हृदय गुरु विरजानन्द की सत्यनिष्ठा को पाकर जितना तृप्त हुआ, उतनी ही तृप्ति गुरु विरजानन्द जी को स्वामी दयानन्द की सत्य–पिपासा देखकर मिली। लगता है दैव की लीला कोई युगान्तर की भूमिका बना रही थी। सांसारिक दृष्टि से दोनों निपट निरीह गुरु–शिष्य संसार में इतना बड़ा जन–जागरण ला सकेंगे– यह कौन जानता था? आर्यो! धैर्य रखिये!! कर्त्तव्य कर्म में जुटे रहिए, सत्यनिष्ठा का

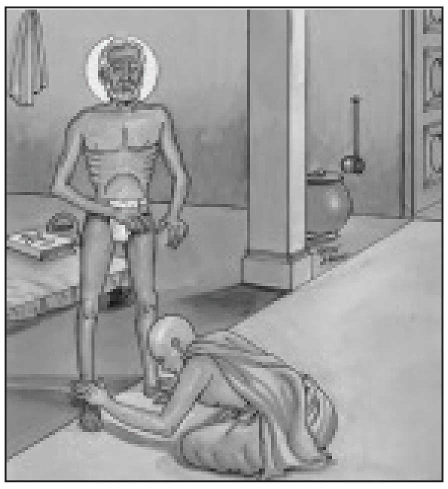

पल्लू मत छोड़िए। सत्य में शक्ति तो अजेय होती है, लेकिन वह लंगड़ा होता है, स्वयं चल नहीं सकता। स्वामी विरजानन्द के हृदय में बैठी सत्यनिष्ठा को अपने जीवन का सहारा देकर दयानन्द उसे विश्व का विरोध सहकर भी अजेय बनाए रख सकता है तो हम क्यों नहीं? हम दयानन्द नहीं है, दयानन्द विरजानन्द नहीं था– हम–हम हैं। हम भी आर्य हैं। हम ज्ञान सम्पन्न होकर गतिमान हो जाएंगे तो लक्ष्य की प्राप्ति होगी ही। गुरु विरजानन्द जी के अधूरे सपने पूरे करने में दयानन्द अपने जीवन की आहुति दे सकता है तो हम दयानन्द के सपनों के लिए ऐसा क्यों नहीं कर सकते?

आर्यो! यह एक युगों तक चलने वाली लम्बी दौड़ है। गुरु विरजानन्द जी ने अपना सारा जीवन सत्य की खोज में खपा दिया। अनार्ष जाल ग्रन्थों के घाटाटोप में से महर्षि पाणिनी की आर्ष व्याकरण विद्या को निकालकर उसकी सत्यता के आधार पर आर्ष–अनार्ष ग्रन्थों की पहचान कर, अपने निष्कर्षों को स्वामी दयानन्द के सबल हाथों में थमा गया। स्वामी दयानन्द जी ने अपना सारा जीवन लगाकर अपनी तप साधना के बलपर गुरु से प्राप्त निष्कर्षों को जीवन के हर क्षेत्र में, हर कसौटी पर जाँच परख कर उन्हें विश्वव्यापी स्वरूप दिया। अब हमारे सामने करने के लिए कुछ अधिक नहीं है। हमें तो पके पकाए को परोसना है। हमें तो जाँचे–परखें सत्य का संवाहक बनना है। जिस सत्य के बल पर दयानन्द इतना काम कर गया, क्या वह सत्य हमारा साथ न देगा? दयानन्द के पास अपनी कोई शक्ति नहीं थी, उसके पास जो भी बल था, वह उसकी सत्यनिष्ठा का बल था, वह उसकी ईश्वर भक्ति का बल था। दयानन्द के पास जो बल था वह उसकी कर्त्तव्यपरायणता का बल था, उसके परोपकार के प्रति अटूट समर्पण का बल था, क्या यह बल हम अर्जित नहीं कर सकते? हम सत्यनिष्ठ, ईश्वर भक्त, कर्त्तव्यपरायण व लोक हितैषी नहीं बन सकते? क्या करना चाहते हैं हम आर्यसमाज की वेदी से? क्यों जुड़ना चाहते हैं हम आर्यसमाज से? आर्य समाज के पास हमारे लिए सत्य निष्ठा, ईश्वर भक्ति व कर्त्तव्य परायणता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। हम सत्यनिष्ठा व ईश्वर भक्ति के बिना 'कीर्तिकलश' नहीं बन सकते। किसान अनाज के लिए खेती करता है भूसे के लिए नहीं। भूसा तो अनाज के साथ प्रभु व्यवस्था से मिल ही जाता है। आर्यसमाज में आकर केवल भूसे (यश) के लिए खेती (श्रम) करना बुद्धिमानी नहीं है। आर्यो! यह बेला विचार करने की है, यह बेला संकल्प लेने की है, यह बेला गुरु–गौरव को बचाने और बढ़ाने की है। दयानन्द ने अपने गुरु से जो वेद–ज्ञान व आर्ष ग्रन्थों का झण्डा लिया था, वह आज (संगठन शक्ति) डण्डे के बिना अनाथ की तरह हो गया है। उसे कुछ सबल हाथों की प्रतीक्षा है। क्या हम साहस जुटाएंगे।? उस कृशकाय साधु की तपस्या हमारे उठ खड़े होने से ही सफल होगी! हमारी श्रम साधना ही गुरु विरजानन्द की सत्य साधना को संजीवनी प्रदान कर सकती है। आशा है हमारे मध्य अभी वेदना को प्रेरणा बना लेने वाले आर्यजन हैं। उन्हीं संकल्पशील आर्यो के सहृदय सहयोग व सिद्धान्तनिष्ठ संगठन के साथ समवेत् स्वर से हम उस पावन प्रज्ञाचक्षु के प्रति–श्रद्धाञ्जलि प्रकट करते हैं –

"विश्व गुरु के गुरु, मेरा तुमको नमन।
साधुता को नमन, साधना को नमन।।"

– आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक',
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (5)

स्याच्चैकस्य ब्रह्मशब्दवत् ।।५।।

अर्थ– (स्यात्) हो (च) भी (एकस्य) एक का (ब्रह्मशब्दवत्) ब्रह्म शब्द की तरह। अर्थात् एक पद का कहीं गौण और कहीं मुख्य अर्थ में प्रयोग हो सकता है, जैसा कि तैत्तिरीय उपनिषद् में ब्रह्म शब्द का प्रयोग हुआ है।

भावार्थ– तैत्तिरीय उपनिषद् (३/२) में कहा है– ''तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति।" अर्थात् तप द्वारा ब्रह्म को जानने की इच्छा कर, तप ही ब्रह्म है। इस वाक्य में एक ही ब्रह्म शब्द का पहला प्रयोग मुख्य अर्थ में हुआ है जबकि दूसरा गौण अर्थ में। यहाँ ज्ञान के साधन रूप तप को ब्रह्म कहा है। इसी तरह तैत्तिरीय उपनिषद् (२/२/२) में **"सम्भूत:"** शब्द गौण और मुख्य दोनों अर्थों में माना जा सकता है। **"सम्भूत:"** शब्द का आकाश के लिए गौण रूप में तथा वायु, अग्नि, जल आदि के लिए मुख्य रूप में प्रयोग हुआ है। शिष्य प्रश्न करता है कि ऊपर के विवेचन में चाहे आकाश से उत्पत्ति के बारे में विरोध न हो परन्तु तैत्तिरीय उपनिषद् (२/६) के अनुसार कर्त्ता ब्रह्म से संपूर्ण जगत् की उत्पत्ति का विरोध तो होगा ही। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा है – ***"सोऽकामयत......स इदं सर्वमसृजत यदिदं किञ्च।"*** अर्थात् उसने संकल्प किया और यह जो कुछ भी दृश्यमान है, उसे उसने बनाया। इस सब कुछ में "आकाश" भी सम्मिलित होना चाहिए। यदि आकाश इसमें सम्मिलित न हो तो 'उसने इस सबको बनाया' यह कथन ठीक नहीं होगा। यदि आकाश की उत्पत्ति मानें तो आकाश को अनुत्पन्न न होने वाला) बताना असंगत हो जाता है। इस प्रकार दोनों पक्षों पर विचार करने के पश्चात् सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान प्रस्तुत करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किन के घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज के स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के वृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी साफ कॉपी करके अवश्य भेजें।

नोट: इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट: 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर विवरण प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र 31 दिसम्बर, 2009 से पूर्व भेज देवें।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान
विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

गवांदी उम्र तुझे पाने में

गवांदी उमर पूरी तुझे पाने में।
भटकता फिरा, सारे जमाने में।।

जाने कितने उपवास, व्रत कर डाले।
घूमे जाने कितने मन्दिर और शिवाले।।

तीरथ स्नान जिन्दगी भर करता रहा।
शरीर को तपा धूप, सर्दी सहता रहा।।

नाम से तेरे लुटता रहा, धर्म के ठेकेदारों से।
चढ़ावा, चढ़ाता रहा वहां हजारों से।।

पर तू तो दाता है, सबका भंण्डार तू।
देवता तू, सबका पालनहार, तू।।

तुझे तेरी ही चीजें देता रहा।
सूखी नदियों में नाव खेता रहा।।

पर ये सब बाहर की आखों ने करवाया।
ज्ञान चक्षु का ख्याल ही नहीं आया।।

ढूढ़ना था जहां, बस वहीं ढूंढ़ा नहीं तुझे।
भटका दिया, उलझा दिया जमाने ने मुझे।।

पहले ही अगर मन मन्दिर में, तुझे देखा होता।
तो तेरे नाम पर नहीं होता, कोई धोखा।।

देखा जब अन्दर की आंखें खोल,
तो तुझे हरदम वहां पाया।
तू इतना करीब था कि प्रकाश,
तुझे समझ ही न पाया।।

– प्रकाश आर्य, महू (म.प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए, युवाओं को साथ जोड़ने के लिए, देश और समाज में पुनः वैदिक मान्यताओं के प्रचार के लिए, देश–भक्त और महर्षि मिशन के सिपाही तैयार करने के लिए, भारतीय जनमानस को पुनः झकझोरने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म

"सत्य की राह" वीसीडी
केवल 25/– रुपये में

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें। आओ हम सब मिलकर महर्षि के सपनों का भारत बनाने में सहयोग करें। आओ हम सब देशभक्त बनकर पुनः विश्वगुरु भारत का सृजन करें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की संगीतमय प्रस्तुति
"गुरुदेव दयानन्द" ऑडियो सीडी
सुन्दर मधुर भजनों का मनभावन संकलन
केवल 20/- रुपये में

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं। पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष: 011–23365959, टेलिफैक्स : 011–23343737, Email : aryasabha@yahoo.com;

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री
अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग की ओर से चण्डीगढ़ में साहित्य प्रचार

चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में लगाया गया प्रचार स्टाल

वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार के लक्ष्य

पटना पुस्तक मेले में प्रचार हेतु कार्यकर्ता रवाना

दिनांक 7 से 15 नवम्बर, 2009 तक गांधी मैदान पटना में होगा साहित्य प्रचार

पटना क्षेत्र के अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वेद मन्दिर के साथ मिलकर वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल लगाया। इस स्टाल पर सभा कार्यकर्ता श्री अशोक गुप्ता एवं वेद मन्दिर के कार्यकर्ताओं ने सक्रियता से कार्य किया। चण्डीगढ़ के जन–मानस में इसके लिए उत्साह देखा गया तथा भारी संख्या में सभा के साहित्य स्टाल पर पधारे।

पुण्य तिथि पर विशेष

लौह पुरुष की विस्मृति राष्ट्र घातक

किसी प्राचीन नीतिकार ने कहा है कि चाहे आप काँच को सिर पर रख लें और मणि को पैरों में रौंदते रहें, लेकिन जब गुणवत्ता का प्रश्न आएगा तो काँच–काँच ही रहेगा और मणि–मणि ही रहेगी। विश्व इतिहास का विलक्षण पुरुष बल्लभ भाई पटेल सच्चे अर्थों में राष्ट्रपिता था। 562 रियासतों का एकीकरण करके भारत को वर्तमान स्वरूप देना ऐसा काम था जिसे पटेल जैसा लौह पुरुष ही सम्भव बना सकता था। 31 अक्टूबर को समाचार–पत्रों में लौह महिला के नाम से विख्यात श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर तो बहुत कुछ था, लेकिन लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल के महान् योगदान के अनुरूप उनके बारे में देखने–पढ़ने को नहीं मिला। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में पटेल की पराक्रमी भूमिका को भुला देना या श्रीमती इन्द्रिरा गाँधी के आभामण्डल में उसका अवमूल्यन करना निश्चित रूप से राष्ट्रीय स्वाभिमान को ठेस पहुँचने जैसा काम है। राष्ट्र को आज पटेल के पराक्रमी पौरुष की आवश्यकता है। आज राष्ट्र चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है। चीन के चौतरफा चाक–चौबन्द को देखकर पटेल की याद अचानक आ ही जाती है। चीन की चालाकियों को सबसे पहले पटेल ने ही परखा था। 7 नवम्बर, 1950 को पटेल ने नेहरू के नाम एक पत्र लिखा। उस पत्र में पटेल ने जो कुछ लिखा उसकी झलक देखिए– "मैंने विदेश मंत्रालय तथा पीकिंग में भारतीय राजदूत और उनके द्वारा चीनी सरकार से हुए पत्र व्यवहार को पढ़ा है......इसमें

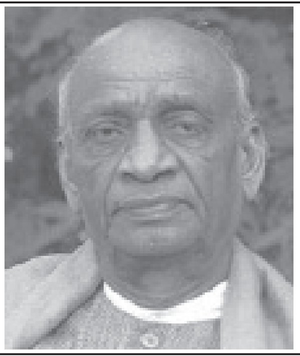

कोई संदेह नहीं कि इस पत्र–व्यवहार में जो समय बीता है, उस बीच चीनी लोग तिब्बत पर आक्रमण करने की तैयारी में लगे होंगे......हम अपने को चीन का मित्र समझते हैं चीनी हमें अपना मित्र नहीं मानते।..........ऐसा लगता है कि इस भाषा को कोई मित्र नहीं, बल्कि सम्भावित शत्रु बोल रहा है।'' पटेल भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर थे, वे भारतीय साहित्य का तलस्पर्शी ज्ञान रखते थे। महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय योगदान के सम्बध में पटेल ने कहा था– "स्वामी दयानन्द जी का सबसे बड़ा योगदान यह था, कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्य विमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली।" पटेल के पौरुष को नई पीढ़ी में प्रविष्ट कराने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारा मीडिया पटेल के जीवन और उनके राष्ट्रीय योगदान को आलेख व परिचर्चाओं के माध्यम से जनता के सामने रखे। पटेल जैसे विराट् पुरुष की विस्मृति राष्ट्र को स्वाभिमान् शून्य बना देगी। ऐसी स्थिति से बचना है तो पटेल के आदर्शों को पकड़े रखना होगा।

"तुमने दिया देश को जीवन देश तुम्हें क्या देगा। अपना रक्त गर्म करने पर नाम तुम्हारा लेगा।"

समस्त आर्यसमाजें ध्यान दें!

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न सम्मानों हेतु दिल्ली के

आर्यसमाजों/गुरुकुलों/आर्यवीर दल/वीरांगना दल/शिक्षण संस्थाओं से नाम भेजें

दिल्ली में आयोजित क्षेत्रीय बैठकों में दिए गए विभिन्न आधारों पर दिए जाने वाले सम्मानों के लिए अपनी आर्यसमाज से नाम यथाशीघ्र, **'संयोजक'** के नाम **'125वां निर्वाण वर्ष सम्मान चयन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष – 011–23360150, 23365959, 23343737'** के पते पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए समिति कार्यालय के उपरोक्त नम्बरें पर सम्पर्क करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

उजला बना दो

प्रभु मेरे जीवन को उजला बना दो,
सत्य की राह पर चलना सिखा दो।
शुभ विचारों से इस मन को भर दो,
हृदय में प्रेम रस धारा बहा दो।।
प्रभु मेरे जीवन को उजला बना दो।।

परस्पर सहयोग भावना का विकास कर दो,
सभी फले फूले मेरी ये इच्छा पूरी कर दो।
अभाव भय भूख को जड़ से मिटा दो,
अमन चैन की शीतल बयार चला दो।।
प्रभु मेरे जीवन को.......

अहंकार की भावना का बीज नाश कर दो,
भक्ति भावना का हृदय में विस्तार कर दो।
संतोष सब्र कर के मुझे जीना सिखा दो।
अपनी दया दृष्टि से मुझे पावन कर दो।।
प्रभु मेरे जीवन को.......

अहिंसा का दीपक अब घर घर जला दो,
इस मन को नम बनके रहना सिखा दो।
विश्वास की भावना से हमें जीना सिखा दो,
चैतन्यता की रोशनी से बुराईयाँ मिटा दो।।
प्रभु मेरे जीवन को.......

सुबह शाम इस मन को भक्ति में लगा दो,
जिह्वा को हरिनाम जपने की लत लगा दो।
तेरी कृपा पाने की मुझे कोई युक्ति बता दो,
आनन्द रस का प्याला जीभर के पिला दो।।
प्रभु मेरे जीवन को.......

अमृत वर्षा करके मेरा तन मन भिगो दो,
अपने नाम की खुमारी में रहना सिखा दो।
परम धाम जाने की मुझे विधि बतला दो,
अपनी शरण में लेने की कोई रीति बता दो।।
प्रभु मेरे जीवन को.......

– विनोद महाजन नाचीज
2585 , बस्ती पंजाबियन,
सब्जी मण्डी, दिल्ली –7

वैवाहिक विज्ञापन – विशेष सूचना

महर्षि दयानन्द जी की यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह हमेशा सदृश अर्थात् परस्पर समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही होना चाहिए। क्योंकि **ऐसे विवाह से ही कुल में प्रसन्नता रहती है और उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है।**

आज हमारी पारिवारिक अशान्ति, कलह, दु:ख और वैमनस्य का मूल कारण महर्षि के इस वचन का पालन न करना ही है। महर्षि ने तो मनु के प्रमाण से बलपूर्वक यहाँ तक कह दिया कि "चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार (अविवाहित) रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाववालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"

अत: सुख, शान्ति प्रसन्नता और आनन्द चाहने वालों का परम कर्तव्य है कि वे ऋषियों के निर्देश का पालन करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परस्पर विवाह रचायें।

इधर काफी दिनों से देश विदेश के कतिपय आर्य परिवारों की यह मांग रही है कि आर्य संदेश में वैवाहिक विज्ञापन का स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जाये, **जिससे कि आर्य परिवारों को श्रेष्ठ, सुशील, निर्व्यसनी शाकाहारी, धार्मिक वर अथवा वधू के चयन में अत्यन्त सुगमता हो।** इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब 'आर्यसन्देश' में वैवाहिक विज्ञापन सेवा प्रारंभ की जा रही है। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस सेवा का लाभ उठाकर अपने सुखमय परिवार की आधार शिला बनावें।

ध्यान दें :– 'आर्य सन्देश' में अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन में 'जाति बन्धन नहीं', और 'आर्य वर/आर्य कन्या की आवश्यकता है' ऐसा देना अनिवार्य है। एक अंक के लिए निर्धारित विज्ञापन शुल्क 150/–, दो अंक के लिए 200 तथा लगतार तीन अंकों के लिए 300/– रुपये देय होगा।

– ***सम्पादक***

वर चाहिए

गोरी, सुन्दर, सुसंस्कृत, मेधावी, आयु 26 वर्ष, कद 5 फुट 7 इंच, प्रसिद्ध बिजनस स्कूल से मैनेजमेंट की डिग्री प्राप्त, दक्षिण दिल्ली के प्रतिष्ठित, सम्पन्न, क्षत्रिय आर्य परिवार की कन्या हेतु शाकाहारी, सम्मानित परिवार का सुयोग्य, लम्बा, आकर्षक व्यक्तित्व का अच्छे संस्थानों से इंजीनियर तथा एम.बी.ए. वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं। कृपया विस्तृत जानकारी भेजने का कष्ट करें।

– श्री एस. पी. सिंह

सी–521, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली–110024

Email : ger983@gmail.com, मो. 09891795601

उपयुक्त वधू चाहिए

46 वर्षीय 5′5′′ तलाकशुदा, सरकारी सेवारत, आय 2.5 लाख वार्षिक, अंडर ग्रेजुएट, स्वस्थ, अपना मकान, को सेवाभाव युक्त, शिक्षित, जरूरतमंद (Caring, Educated, Needy) 32–38 वर्षीय विधवा, तलाकशुदा अथवा अविवाहित, वधू की आवश्यकता है। कोई जाति बन्धन नहीं। सम्पर्क करें।

– *गुप्ता जी – 9213107131*

वधू चाहिए

राजस्थान कोटा के एक आर्य परिवार के सुपुत्र नाम मनीष, आयु 30 वर्ष, रंग गेहूंआ, कद 5′6′′, शैक्षिक योग्यता बी.एस.सी, एम.बी.ए., प्राईवेट सर्विस, पिता जल संसाधन विभाग (राजस्थान) में अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता, को आर्य परिवार की कन्या की आवश्यकता है। आर्यपरिवार को प्राथमिकता दी जाएगी। कोई जाति बन्धन नहीं। सम्पर्क करें – **श्री रामप्रसाद गुप्ता 'याज्ञिक'**

एम.पी.बी.– 56, महावीर नगर–1, कोटा – 324005 (राज०)

दूरभाष : 0744–2427508, 09414745423

आर्य वधू चाहिए

एक आर्य परिवार के सुपुत्र नाम शरद अग्रवाल, आयु 27 वर्ष, रंग गोरा, इकहरा बदन, कद 5′8′′, शैक्षिक योग्यता एम.एस.सी, मैडिकल कम्पनी में एम. आर. आय 15 हजार मासिक, दो भाई, बहन कोई नहीं, पिता अध्यापक, को आर्यपरिवार की कन्या की आवश्यकता है। जाति एवं दहेज रहित विवाह। सम्पर्क करें **– दयाशंकर आर्य, उत्सव गिफ्ट गैलरी, बड़ा बाजार, गढ़ मुक्तेश्वर (गाजियाबाद) दूरभाष : 05731–221211, 9259624025**

वेद प्रकाशन हेतु विद्वत् गोष्ठी सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के एवं आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 28 अक्टूबर, 2009 को दोपहर 12 बजे दिल्ली सभा कें कार्यालय में भावी वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत वेद प्रकाशन सम्बन्धी सम्भावनाओं पर विचार–विमर्श हेतु एक विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पं0 सत्यानन्द जी वेद वागीश ने की। चर्चा को प्रस्तावित करते हुए श्री धर्मपाल जी ने कहा कि चर्चा के दो भाग हैं प्रथम मूल संहिता के प्रकाशन सम्बन्धी तथा द्वितीय वेदभाष्य प्रकाशन सम्बन्धी। मूलसंहिताओं पर मतभेद या बहुत कम विवाद है, लेकिन भाष्य के सम्बन्ध में हमें विस्तृत चर्चा करनी है। सभा के महामन्त्री विनय जी ने बताया कि हम वेदों को इस रूप में प्रकाशित करना चाहते हैं कि एक सामान्य जिज्ञासु पुरुष अपनी कुछ सांसारिक समस्याओं का समाधान वेद में ढूँढें तो उसे पूरे वेद न टटोलने पड़ें। हम ऐसी विषय सूची साथ में दें जो सामान्य पाठक के लिए सुविधानजक हो। उन्होंने एक सज्जन राजपाल अग्रवाल द्वारा तैयार एक पुस्तका का सूची रखी। पं0 सत्यानन्द जी वेद वागीश ने बताया कि मैंने इस दिशा में प्रयास किया है। सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न विषयों को लेकर ऋषि भाष्य के संस्कृत व हिन्दी भावार्थ उन विषयों की पुष्टि में दिये हैं। ग्रन्थ दो भागों में है, वह आपके इस काम में उपयोगी रहेगा। गुड़गाँव से गोष्ठी में पधारे डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी ने कहा कि विषय का चयन महर्षि भाष्य पर आधारित होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि जिस मन्त्र का जो विषय महर्षि–भाष्य में है, अन्य में हो।

चर्चा में भाग लेते हुए डॉ0 महावीर जी मीमांसक ने मूलसंहिता व शाखाओं की बात पं0 सामश्रमी के 'ऐतरेयालोचन' के सन्दर्भ में उठाई। उन्होंने कहा कि या तो महर्षि को ज्यौं का त्यौं मान लें या विचार करें तो सबका मत लें। निर्णय हुआ कि मूल वेद जो महर्षि मान्य हैं, उनकी सर्वाधिक प्रमाणिक प्रति लें। उनमें छपाई व प्रूफ शोधन की कतिपय भूलें हों उन्हें मिल बैठकर ठीक कर लें। इसके लिए परोपकारिणी सभा की मूलसंहिता आधार भूत मानी जाएगी। सम्भावित ऐसी भूलों के सम्बन्ध में पं0 वागीश जी ने कहा कि मूल संहिताओं में 10–20 तथा भाष्यों में लगभग 300 त्रुटियां सम्भव हैं। श्री विनय जी की भावनानुसार मूल संहिताओं में छन्द देवता, स्वर ऋषि व ब्राह्मण (किस वेद का कौन–सा ब्राह्मण) आदि का संक्षिप्त परिचय दे दिया जाना चाहिए।

जहाँ तक वेदभाष्य का प्रश्न है उनमें उक्त विवरण के साथ वेद ज्ञान की सामान्य जन के लिए उपयोगिता परक परिचय भी देना उपयोगी रहेगा। साथ में वेद सम्बन्धी भ्रान्तियों के निराकरण (वेद में ऐतिहासिकता व व्यास कृत आदि) हेतु विद्वानों का चयन कर समिति बना दी जानी चाहिएं। तय हुआ कि उक्त भूमिका लेखन के लिए वेदों का परिचय डॉ0 महावीर जी मीमांसक, स्वर, चिह्न, ऋषि, देवता व छन्द आदि के सम्बन्ध में पं0 वागीश जी तथा ब्राह्मण और अरण्यक (घ) से लेकर अध्याय, मण्डल, सूक्त मन्त्र एवं मन्त्र संख्या का कार्य विवरण पं0 राजवीर जी करेंगे। विचारणीय बिन्दु (च) वर्णित महत्त्वपूर्ण सूचियाँ तैयार करना डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी ने स्वयं स्वीकार कर लिया।

भाष्य के प्रकाशन सम्बन्धी चर्चा चली तो प्रथमत: जो महर्षि भाष्य प्राप्त है, वह तो है ही। शेष किसका लेना है इस पर चर्चा चली तो ऋग्वेद का अवशिष्ट भाष्य जो पं0 आर्यमुनि जी एवं पं0 ब्रह्ममुनि जी द्वारा हुआ है वहीं लेना है। यह निर्णीत रहा। महर्षि भाष्य के सम्बन्ध में एक विचार आया कि आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट ने श्री पं0 सुदर्शन देव जी द्वारा महर्षि भाष्य का सरलीकरण करवाया था। उसमें पदार्थ महर्षि का ही है, लेकिन सान्वय भावार्थ सरल करके तैयार किया है। इस चर्चा में भाग लेते हुए डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी ने कहा कि महर्षि का हिन्दी भाष्य पण्डितों का किया हुआ है जिन पर स्वयं महर्षि भी कई बार अपत्तियाँ प्रकट कर चुके हैं। ट्रस्ट ने सरलीकरण करके हिन्दी भाष्य को सामान्य पाठक के लिए सरल व सुबोध बना दिया है। ऋषि भाष्य में कई स्थल सुबोध नहीं हैं। डॉ0 महावीर ने कहा कि हम सरलीकरण वाला भाष्य ले लें और कल कोई वेदपाठी सज्जन हमारे भाष्य को ऋषि के अन्यत्र प्रकाशित भाष्य से मिलाएगा तो क्या भ्रांति नहीं होगी? कम–से–कम ऋषि भाष्य तो एक जैसा हो! धर्मपाल जी ने कहा कि इसके लिए भूमिका में स्पष्ट कर देंगे कि ऋषि का सरलीकरण इन महानुभाव द्वारा किया गया है। पदार्थ में तो कोई भेद है ही नहीं। इसी के साथ चर्चा चली कि पं0 सुदर्शन देव जी कृत सान्वय सरलीकरण भी पूरा प्रकाशित नहीं है, उसका कुछ भाग उनके परिवार के पास अप्रकाशित पड़ा है। डॉ0 सुरेन्द्र जी ने उनके पारिवारिक सूत्रों से यह जानकारी दी तो उस प्रकाशित सामग्री को प्राप्त करने का काम श्री धर्मपाल जी ने डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी के सहयोग से कर लेने का आश्वासन दिया।

सामवेद व अर्थवेद पर चर्चा चली तो तय हुआ कि सामवेद पं0 ब्रह्ममुनि जी एवं पं0 रामनाथ जी वेदालंकार के भाष्य लेकर डॉ0 महावीर जी मीमांसक और श्री वागीश जी को उपलब्ध कराएंगे वे अवलोकन करके निर्णय करेंगे कि इनमें से कौन–सा प्रकाशित किया जाएगा।

अंत में चर्चा चली कि अपने इस वेद प्रकाशन अभियान में कतिपय आर्य विद्वानों का सहयोग लेना चाहिए। कुछ नाम प्रस्तावित हुएजिनमें डॉ0 ज्वलन्त कुमार जी, श्री राजवीर जी शास्त्री, डॉ0 धर्मेन्द्र जी, डॉ0 महेश जी विद्यालंकार, डॉ0 रघुवीर जी, आचार्य उदयन, सुश्री सूर्या जी आदि के सहयोग से वेद प्रकाशन सम्बन्धी भूमिका एवं सम्पूर्ण देखदेख का काम होगा। आवरण आदि का काम प्रकाशन विशेषज्ञ करेंगे।

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली

54वां वार्षिकोत्सव एवं सामवेदीय यज्ञ

12 से 15 नवम्बर, 2009

प्रभातफेरी : 10 एवं 11 नवम्बर, 09
यज्ञ : प्रातः 6 से 7.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन : श्रीमती शशि प्रभा आर्या

आर्य महिला सम्मेलन : 14 नवम्बर

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

रविवार 15 नवम्बर, 2009

अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल जी
मुख्यवक्ताः डॉ. महेश विद्यालंकार

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– दीनानाथ गुलाटी, प्रधान
चतुर्भुज अरोड़ा, मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का

57वें वार्षिकोत्सव

16 से 22 नवम्बर, 2009

ऋग्वेद यज्ञ : प्रातः 7.30–9.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य हरि प्रसाद जी
ऋत्विक् : डॉ. कर्णदेव शास्त्री
भजन : श्री दिनेश दत्त जी

पूर्णाहुति एवं विशेष प्रवचन

रविवार 22 नवम्बर, 2009

प्रवक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. सुषमा शर्मा एवं आचार्य हरि प्रसाद जी
विषयः देशोद्धारक महर्षि दयानन्द
नारी शिक्षा और महर्षि दयानन्द
वेदों में धर्म का स्वरूप

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान
नरेन्द्र सिंह हुड्डा, मन्त्री

आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

20वां वार्षिकोत्सव

16 से 22 नवम्बर, 2009

प्रभातफेरी : 14 नवम्बर, 09
यज्ञ : प्रातः 6.30 से 9 बजे
ब्रह्माः आचार्य विकास तिवारी
भजन : पं. योगेश दत्त आर्य
प्रवचन : डॉ. योगेन्द्र कुमार शास्त्री

आर्य महिला सम्मेलन : 20 नवम्बर

पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन

रविवार 22 नवम्बर, 2009

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– बलदेव जिन्दल, प्रधान
रवि चड्ढा, मन्त्री

आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली का

30वां वार्षिकोत्सव

2 से 8 नवम्बर, 2009

समापन समारोह : 8 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बजे
ब्रह्मा : आचार्य मनजीत शास्त्री
विशिष्ट वक्ता : आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री
डॉ. सूर्य नारायण नन्द
विषय : स्वस्थ और तेजस्वी समाज का निर्माण कैसे हो?
संगीत : श्री श्याम वीर राघव

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– डॉ. पूर्णसिंह डबास, प्रधान
प्रमिला नैयर, मन्त्री

आर्यसमाज बैंक इन्कलेव, दिल्ली का

22वां वार्षिकोत्सव

11 से 15 नवम्बर, 2009

आर्य महिला सम्मेलन : 10 नवम्बर

आध्यात्मिक सम्मेलन : 15 नवम्बर

भजन : पं. राजवीर शास्त्री
प्रवचन : आचार्य चन्द्रशेखर

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– जगदीश पाहुजा, प्रधान
राजेन्द्र मल्होत्रा, मन्त्री

आर्यसमाज मोती नगर, नई दिल्ली का

वार्षिकोत्सव समारोह

2 से 8 नवम्बर, 2009

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

यज्ञ : प्रातः 8 से 9.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य अखिलेश्वर जी
भजन : श्रीमती सुदेश आर्य

सभी आर्यजन सपरिवार पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– वी. एन. बत्रा, प्रधान
अनिल कुमार, मन्त्री

आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली का

58वां वार्षिकोत्सव

10 से 15 नवम्बर, 2009

प्रभातफेरी : 7, 8, 9 नवम्बर, 09
ऋग्वेदीय यज्ञःप्रातः 6.30–8.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य हरि प्रसाद जी
पुरोहित : पं. अमरदेव शास्त्री
भजन : पं. सत्यपाल पथिक
भजन : सायं 6.30 से 7.30 बजे
वेद प्रवचन : आचार्य हरि प्रसाद जी
आचार्य वागीश जी
प्रवचन : सायं 6.30 से 7.30 बजे

यज्ञ पूर्णाहुति : 15 नवम्बर, 2009

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– विजय कुमार भाटिया, प्रधान
पुरुषोत्तम आनन्द, मन्त्री

राष्ट्र भाषा हिन्दी अधिकाधिक प्रयोग करें।

आर्यसमाज एल ब्लाक, आनन्द विहार, हरि नगर, नई दिल्ली का

34वां वार्षिकोत्सव

11 से 15 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.15 से 7.15 बजे
ब्रह्माः श्री कुंवरपाल शास्त्री
भजन : श्री उधम सिंह आर्य
वेद कथा : आचार्य शिवनारायण शास्त्री

आर्य महिला सम्मेलन

11 नवम्बर मध्याह्न 2 से 5 बजे

बाल–बालिका सम्मेलन

14 नवम्बर मध्याह्न 2 से 4 बजे

समापन एवं आर्य महा सम्मेलन

15 नवम्बर प्रातः 7 से 1 बजे
मुख्य वक्ता : डॉ. अजय आर्य एवं
श्री शिवनारायण शास्त्री
विषय : वेद विज्ञान
वेद का व्यवहारिक स्वरूप

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– वी. के. मल्होत्रा, प्रधान
महेन्द्र सिंह, मन्त्री

तथाकथित पावन नवरात्रे एवं सन्त रामपाल के महर्षि दयानन्द एवं उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में अनर्गल प्रचार–प्रसार के विषय में विचार गोष्ठी

28 अक्टूबर, 2009 को डॉ0 सुरेन्द कुमार जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में 3.30 बजे एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें तथाकथित 'पावन नवरात्रे' पर चर्चा की गई। डॉ0 कर्णदेव शास्त्री धर्माचार्य आर्यसमाज हनुमान रोड ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाजों में इन्हीं दिनों में यज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा कई घरों में भी इन्हीं दिनों यज्ञ करवाया जाता है। कई आर्य समाजियों के परिवार में यज्ञ कराये जाते हैं तो लोग कहते हैं कि पण्डित जी अब लक्ष्मी पूजन कराओ। पुरोहितों द्वारा इसका विरोध नहीं किया जाता। डॉ0 सुरेन्द्र कुमारे ने कहा कि हमें किसी भी स्थिति के पौराणिकता को महामामण्डित नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी दृष्टि में नवरात्रे पावन नहीं है, हमारे लिए सब दिन शुभ है। जिस दिन घर में प्रसन्नता और हितकारी भावना हो, वही शुभ दिन है। आचार्य हरिप्रसाद जी ने भी कहा कि लोग पौराणिक विधि के अनुसार इन दिनों यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं।

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने नवरात्रों की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा कि नवरात्रों में नौ देवियों की पूजा का विधान है। हमारी दृष्टि में नवरात्रे में पावन नहीं है। हमारे लिए सब दिन पावन है। उन्होंने कहा कि नवरात्रों के अवसर पर विशेष आयोजन करने का यह सन्देश जाता है कि ये नौं दिन होते विशेष और पवित्र ही हैं, किन्तु आर्यसमाज इनको दूसरे ढंग से मनाता है। जबकि सैद्धान्तिक दृष्टि से यह सन्देश जाना उचित नहीं है। अतः इन बढ़ती हुई प्रवृतियों को रोकने के लिए संगठन को कार्य करना चाहिए। कई महिला सदस्यों ने कहा कि आजकल आर्यसमाजों के कई आयोजनों पर भोजन की व्यवस्था में व्रत वाला और बिना व्रत वाला भोजन बनता है। यह भेद नहीं होना चाहिए। एक ही प्रकार के भोजन की व्यवस्था होनी चाहिए।

सर्वसम्मति से उपस्थित महानुभावों ने माना नवरात्रे पावन नहीं है तथा इनको पावन सिद्ध करने का यत्न आर्यसमाज को बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

सन्त रामपाल प्रकरण पर चर्चा प्रारम्भ करते हुए सभा मत्री श्री विनय आर्य ने सभी उपस्थित सदस्यों को सूचित किया कि तथाकथित सन्त रामपाल किस प्रकार पोस्टरों तथा बड़े–बड़े होर्डिंगें द्वारा महर्षि दयानन्द व उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर अनर्गल प्रहार कर रहा है और इस सन्दर्भ में श्री गंगाशरण व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा इसके विरोध में काफी सक्रिय हैं।

श्री गंगाशरण जी ने बताया कि उन्होंने हजारों की संख्या में पत्रक छपवाएँ हैं और उन्हें बाँट रहे हैं। श्री विनय आर्य ने बताया कि किस प्रकार ये दोनों पति–पत्नी सन्त रामपाल के विरोध में कार्य कर रहे हैं। सभी उपस्थित सदस्यों ने श्री गंगाशरण व उनकी धर्मपत्नी के इस कार्य की प्रशंसा की। इस सम्बन्ध में एक पुस्तिका भी तैयार की जा रही है जो सभा की ओर से प्रकाशित की जाएगी। इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए कुछ महानुभावों ने सहयोग देने की बात कही। साथ ही साथ संत राम पाल को चैलेंज भी किया जाएगा तथा उसके चैलेंज को स्वाकर करने सम्बन्ध पत्र उसके पास भेजा जाएगा।

सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आज ही लॉगऑन करें

www.aryamahasammelan.com

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक 24, 26, 27 दिसम्बर, 2009

स्थान : – आर्यसमाज 'बी'–ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली–58

24 दिसम्बर : जूनियर्स (कक्षा 3 से 5 के बच्चे आयु 8 से 10 वर्ष)
समय : 4.00 बजे से 7.00 बजे तक (प्रतियोगियों को 3.30 बजे पहुँचना है)
26 दिसम्बर : मिडिल (कक्षा 6 से 8 के बच्चे आयु 11 से 13 वर्ष)
समयः 4.00 बजे से 7.00 बजे तक (प्रतियोगियों को 3.30 बजे पहुँचना है)

प्रत्येक ग्रुप के लिए गायन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगता व ऑब्जेक्टिव पेपर पृथक–पृथक रहेगा

27 दिसम्बर : सीनियर्स (कक्षा 9 से 12 विद्यार्थी आयु 14 से 17 वर्ष)
भाषण प्रतियोगिता : "महर्षि दयानन्द का समाज उत्थान में योगदान"

निवेदक :– मृदुला चौहान (संचालिका) **अंजु बजाज** (सचिव)

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

2 नवम्बर, 2009 से 8 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ०५/०६-११-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : मथुरा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय/स्टाल पर उपलब्ध

वैदिक साहित्य एवं प्रचार सामग्री

क्र. नाम वस्तु	मूल्य
1.ओ३म् ध्वज (छोटा)	10/-
2.ओ३म् ध्वज (मध्यम)	20/-
3.ओ३म् ध्वज (बड़ा)	50/-
4.ओ३म् ध्वज (फैंसी - छोटा)	50/-
5.ओ३म् ध्वज (फैंसी - बड़ा)	100/-
6.यज्ञ गुटका	**400/- सैकड़ा**
7.घड़ी (सुपर)	300/-
8.घड़ी (बड़ी)	100/-
9.घड़ी (छोटी)	75/-
10.लाइट आफ दूथ	**250/-**
11.सत्यार्थ प्रकाश	25/-
12.सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	50/-
13.श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	125/-
14. शगुन लिफाफे	**200/- सैकड़ा**
15.सत्य की राह (वीसीडी)	25/-
16.सत्यार्थ प्रकाश (डीवीडी)	15/-
17.ऋषि गाथा (सीडी)	**25/-**
18.गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	20/-
19.महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड	5500/-
20.महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड	2500/-
21.महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड	1000/-
22.महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड	350/-
23.महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड	250/-
24.महर्षि दयानन्द लेमिनेट	125/-
25.महर्षि दयानन्द लेमिनेट	40/-
26.महर्षि दयानन्द लेमिनेट	20/-
27.महर्षि दयानन्द लेमिनेट	15/-
28.नेम स्लिप्स (18×1)	**5/-**
29.वेदों का सैट	1500/-
30.वेदों का सैट (अंग्रेजी)	2000/-
31. स्कूटर स्टेपनी कवर	10/-
32.125वां निर्वाण वर्ष बैनर	10/-
33.ओ३म् स्टीकर	150/- सैकड़ा
34.ओ३म् स्टीकर (बड़ा)	5/-
35.गायत्री मन्त्र स्टीकर	**50/-**
36. साइंस आफ अग्निहोत्र	**195/-**

इसके अलावा भी अन्य अनेक प्रकार का साहित्य एवं प्रचार सामग्री भी स्टाल पर उपलब्ध होगी। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सम्मेलन स्थल पर बनाए गए सभा के प्रचार स्टाल पर पधारें और उपलब्ध सेवाओं का लाभ उठाएं।

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की ऑडियो डीवीडी। सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली डीवीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। मात्र 15 रुपये में। डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक से देय होगा।

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की समस्त जानकारियां।

आज ही सदस्यता प्राप्त करें

वार्षिक सदस्यता : 150/- आजीवन सदस्यता 750/-

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**